पदम गोधा

ई-मेल-padamkgodha@gmail.com

काग सेवा

कबूतर मुँह में मुहब्बत का संदेश लिये बैठा था। थोड़ा उदास था। किसी पुरानी गरीब प्रेमिका ने उसे चुना था। आजकल तो इन्टरनेट का जमाना है। उसे कौन पूछता है?

इतने में कौवा उसके पास आकर बैठ गया।

"काग भैया, आप बहुत भाग्यशाली हो। आपका कार्य तो अभी तक महत्वपूर्ण है?"

"हाँ कब्बू भाई, मेरी जिम्मेदारी अभी भी विज्ञान नहीं उठा पाया है!"

"मेरा संदेश पहुंचाने का सारा कार्य टेक्नोलॉजी ने ले लिया है... मैं तो बेरोजगार ही हो गया हूँ काग भैया!"

"पर मेरा काम विज्ञान नहीं कर सकता। मैं तो भारतीय सिस्टम हूँ । पेटभर भोजन करता हूँ फिर डकार लेता हूँ और सारा खाना पितरों के पास पहुंच जाता है!"

"श्राद्ध का मास तो आपका ही त्योहार है काग भाई...! देखो सब पकवान कैसे सजे हैं ! आज तो आप विशिष्ट मेहमान हैं ! धर्म-कर्म और पेट पूजा सब एक साथ ! नमन करता हूँ आपको भाई ।"

नीलिमा शर्मा

ई-मेल-:neavy41@gmail.com

पैसा वसूल

बहुत बड़ा बिजनेसमैन बन गया था वो ...दोस्त था जो पढ़ाई वाले दिनों का। आज उसके बार-बार आग्रह करने पर पुराने दोस्तों के साथ मिले तो उसने ही उस फाइव स्टार होटल का सारा बिल चुकाया। उसको कभी हम अपनी पॉकेट मनी से चाय पिलाया करते थे। उसकी गर्ल फ्रेंड के लिए गुलाब खरीदकर उसको दिया करते थे।

चलते-चलते उसने कहा...

"मेरे बिजनेस पर अपने-अपने अखबार में एक आलेख ही लिख दो। कैसे दोस्त हो भाई।"

उसकी मुस्कुराहट में अब वो मासूमियत भरी कशिश नहीं थी जो दस मिनट पहले ठहाके में नजर आई थी।

"यार, हम पत्रकार हैं, बिजनेसमैन से बिजनेस करना सीख गए हैं। एक फ्रीलांसर को भेज देंगे उसको पेमेंट करना और लिखवा लेना। रही बात आज के बिल की, तो ...शेयर होगा भाई...।"